बुजुर्ग जीवन की कथा और सामाजिक यथार्थ: आधुनिक हिंदी साहित्य में बदलते विमर्श

Sharvan Ram Bansura, Research Scholar, Department of Hindi, Sabarmati University, Gujarat

शोध-सार

आधुनिक हिंदी साहित्य में बुजुर्ग जीवन का चित्रण एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं साहित्यिक विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है। भारतीय समाज में वृद्धजनों को परंपरागत रूप से अनुभव, ज्ञान, संस्कार और पारिवारिक मूल्यों का संवाहक माना जाता रहा है, किंतु बदलती सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने उनके जीवन की स्थिति में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। संयुक्त परिवारों का विघटन, एकल परिवारों का विस्तार, शहरीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति और बदलती पीढ़ियों के बीच वैचारिक अंतर ने बुजुर्गों के जीवन को अनेक प्रकार की चुनौतियों से घेर दिया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में इन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप वृद्धावस्था से जुड़ी उपेक्षा, अकेलापन, असुरक्षा, आर्थिक निर्भरता, भावनात्मक पीड़ा और पारिवारिक विघटन जैसे प्रश्न प्रमुखता से अभिव्यक्त हुए हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आधुनिक हिंदी साहित्य में बुजुर्ग जीवन के विविध पक्षों का विश्लेषण करते हुए उनके सामाजिक यथार्थ और बदलते जीवन-मूल्यों को समझना है। साहित्य में बुजुर्ग पात्रों के माध्यम से न केवल पारिवारिक संबंधों की बदलती प्रकृति को उजागर किया गया है, बल्कि समाज में वृद्धजनों की घटती उपयोगिता-बोध, सम्मान और सामाजिक स्वीकार्यता के प्रश्नों को भी सामने लाया गया है। इसके साथ ही वृद्धावस्था को केवल शारीरिक कमजोरी अथवा जीवन के अंतिम पड़ाव के रूप में देखने के स्थान पर एक स्वतंत्र सामाजिक अनुभव और मानवीय संवेदना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य इस संदर्भ में बुजुर्गों के अधिकार, आत्मसम्मान, भावनात्मक आवश्यकताओं और गरिमापूर्ण जीवन की आकांक्षा को स्वर प्रदान करता है। इस प्रकार बुजुर्ग जीवन का साहित्यिक चित्रण समकालीन समाज की संवेदनहीनता, पीढ़ीगत संघर्ष और बदलते पारिवारिक मूल्यों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा वृद्धजनों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।